MSK - 008

परास्नातक कार्यक्रम

एम.ए. संस्कृत ऑनलाईन कार्यक्रम

कार्यक्रम कोड : **MSKOL**

पाठ्यक्रम – सस्ंकृतसाहित्य : गद्य, पद्य एवं नाटक
पाठ्यक्रम कोड : **MSK - 008**

सत्रीय कार्य
जुलाई 2025 एवं जनवरी 2026 सत्रों के लिए

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाधंी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय मैदान
गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

प्रिय छात्र / छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाचँ सत्रीय कार्य (**TMA**) है । सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे ।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठय सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्च सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।

2) बाईं आरे पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है ।

अनुक्रमांक : ....

नाम : ....

पूरा पता : ....

पाठ्यक्रम का नाम / कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....

अध्ययन केन्द्र का नाम / कोड : ....

दिनाँक : ....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्यके प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें **नोट** कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व **नोट** की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए **और** प्रत्येक बिदुं पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या **और** अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता **और** तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें । उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

(क) आपका उत्तर तार्किक और ससुंगत हो,

(ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

(ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप **जोर** देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई 2025 सत्र के लिए : 31 मार्च 2026

जनवरी 2026 सत्र के लिए : 30 सितम्बर 2026

सत्रीय कार्य : 2025 - 2026

एम.ए. संस्कृत ऑनलाईन कार्यक्रम (**MSKOL**)

MSK 008_सस्कृतसाहित्य : गद्य, पद्य एवं नाटक

पाठ्यक्रम कोड – MSK -008
पाठ्यक्रम शीर्षक – सस्कृतसाहित्य : गद्य, पद्य एवं नाटक
सत्रीय कार्य – MSK -008 /TMA/2025-2026

पूर्णांक – 100
नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

प्रश्न सं 1. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच (05) की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए –

5 × 10 = 50

क. अधीतिबोधाचरणप्रचारणैर्दशाश्चतस्रः प्रणयन्नुपाधिभिः ।

चतुर्दशत्वं कृतवान्कुतः स्वयं न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्।।

ख. अथ गीतावसाने मूकीभूतवीणा प्रशान्तमधुकररुतवे कुमुदिनी सा कन्यका समुत्थाय प्रदक्षिणीकृत्य कृतहर प्रणामा परिवृत्य स्वभावधवलया तपःप्रभावप्रगल्भया दृष्टया समाश्वासयन्तीव, पुण्यैरिव स्पृशन्ती तीर्थ जलैरिव प्रक्षालयन्ती, तपोभिरिव पावयन्ती, शुद्धिमिव कुर्वाणा, वरदानम् इवोपपादयन्ती पवित्रतामिव नयन्ती, चन्द्रापीडमाबभाषे – स्वागतमतिथये, कथमिमा ं भूमिमनुप्रातो महाभागः , तदुत्तिष्ठ, आगम्यताम् , अनुभूयतामतिथिसत्कारः इति । एवमुक्तस्तु तया सम्भाषण –मात्रेणैवानुगृहीतमात्मानं मन्यमान उत्थाय भक्तया कृतप्रणामो भगवति ! यथाज्ञापयसि इत्यभिधाय दर्शितविनयः शिष्य इव ता व्रजन्तीमनुवव्राज ।

ग. वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे
न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्ति करोत्यपहन्ति वा ।
भवति हि पुनर्भूयान् भेदः फलं प्रति तद्यथा
प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः ।।

घ. ये कुन्दद्युतयः समस्तभुवनैः कर्णावतंसीकृता
यैः सर्वत्र शलाकयेव लिखितैर्दिग्भित्तयश्चित्रिताः।
यैर्वक्तुं हृदि कल्पितैरपि वयं हर्षेण रोमाञ्चिता
स्तेषां पार्थिवपुंगवः स महतामेको गुणानां निधिः।।

ड. त्रिदिवसमृद्धिस्पर्द्धया भान्ति यस्यां
सुरसदनशिखाग्रेष्वाग्रहग्रन्थिनद्धा।
नभसि पवनवेल्लत्पल्लवैरुल्लसद्भिः
परममिह वहन्त्यो वैभव ं वैजयन्त्यः।।

च . प्रयातुमस्माकमियंकियत्पदं धरातदम्भोधिरपिस्थलायताम्।

इतीववाहैनिजवेगदर्पितैः पयोधिरोधक्षममुद्धतरं जः ।।

प्रश्न सं 2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच (05) प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

5 × 10 = 50

(क) नैधषीयचरितम् के लेखक की भाषा शैली की विशेषताओं कों अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) नैधषीयचरितम् के प्रथमसर्ग के आधार पर वन शोभा का वर्णन कीजिए।

(ग) महाकवि बाणभट्ट की काव्यशैली का वर्णन कीजिए।

(घ) त्रिविक्रमभट्ट के व्यक्तित्व व रचनाओं पर लेख लिखिए ।

(ड.) कालिदास की काव्यशैली का वर्णन कीजिए ।

(च) गद्य साहित्य के उद्भव एवं विकास पर लेख लिखिए।